इकाई 9 कुमारसम्भव (पञ्चम सर्ग) श्लोक 1–10

इकाई की रुपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 शिव प्राप्ति हेतु पार्वती तपस्या का वर्णन

9.3 सारांश

9.4 शब्दावली

9.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.6 बोध /अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई में निर्धारित 'पार्वतीतपः फलोदय' नामक पञ्चमसर्ग (कुमारसम्भव) के पाठ्यांश के अध्ययन से आप :

- छात्र श्लोको के अर्थ तो जानेंगे ही, साथ ही कुमारसम्भव के काव्यवैशिष्टय् को भी ह्रदयगत कर सकेंगे।
- पवित्र लक्ष्य की सिद्धि के लिए किये जा सकने वाले प्रयत्नों की पराकाष्ठा क्या हो सकती है यह भी अपर्णा (पार्वती) की दुष्कर तपश्चर्या से ज्ञात हो सकेगा।
- यहाँ पार्वती का वर्णित चरित्र प्रेरक व युवतियों के लिए आदर्श है – यह भी जान सकेगे।

9.1 प्रस्तावना

कामदेव का आनिध्य रूप भी जब शिव को आकृष्ट न कर सका तो पार्वती को अपने रूप सौन्दर्य की व्यर्थता का भान हो गया और वे अपनी सुन्दरता की निंदा करने लगी –'निनिन्द रूपं ह्रदयेन पार्वती' – क्योंकि जो सौन्दर्य प्रियतम को रिझा न सके वह किस काम का ? फिर तो उन्होंने अपने सौन्दर्य को तपोव्रत से अमोघ बनाने की ठान ली – इयेष सा कत्तुमवन्ध्यरूपताम और तपश्चरण हेतु हिमालय के एक शिखर (गौरीशिखर) पर जा पहुँची। उसके पश्चात पार्वती ने जो घोर तपस्या प्रारम्भ की, मुख्यतः उसी का वर्णन इस पाठ्यांश में है।

9.2 शिव प्राप्ति हेतु पार्वती तपस्या का वर्णन

तथा समक्षं दहता मनोभवं पिनाकिना भग्नमनोरथा सती।
निनिन्द रूपं ह्रदयेन पार्वती प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता ।।1।।

अन्वयः– पार्वती तथा समक्षं मनोभवं दहता पिनाकिना भग्नमनोरथा सती ह्रदयेन रूपं निनिन्द, हि चारूता प्रियेषु सौभाग्यफला भवति ।।1।।

प्रसंग – शिव के तृतीय नेत्र की अग्नि से कामदेव के भस्मसात् हो जाने के पश्चात् अब पञ्चम सर्ग में पार्वती की तपश्चर्या के प्रकार का वर्णन प्रारम्भ किया जा रहा है।

अनुवाद– इस प्रकार अपनी आँखों के सामने ही शंकर जी द्वारा कामदेव को जलाते हुए देखकर पार्वती जी की अभिलाषा चूर–चूर हो गई। वह अपने रूप को धिक्कारने लगी क्योकि सौन्दर्य की सफलता तभी है जब उससे प्रिय को मुग्ध किया जा सके ।।1।।

शब्दार्थ –पार्वती = पर्वत अर्थात् हिमालय की पुत्री। **तथा** = उस प्रकार से। यह शब्द तृतीय सर्ग के 72 वें श्लोक की शिव द्वारा कामदेव को भस्म कर देने वाली घटना की ओर संकेत करता है।

समासाः–मनोभवम्–मनसि भवः (स० तत्पु०) मनोभवः, तम्।

भग्नमनोरथा– भग्नः मनोरथः सौभाग्यफला–सौभाग्यं फलं यस्याः (बहु०) सा।

अलंकारः– अर्थान्तरन्यास

इयेष सा कर्तुमवन्ध्यरूपतां समाधिमास्थाय तपोभिरात्मनः।
अवाप्यते वा कथमन्यथा द्वयं तथाविधं प्रेम पतिश्च तादृशः ।।2।।

अन्वयः–सा समाधिम् आस्थाय तपोभिः आत्मनः अवन्ध्यरूपतां कर्तुम् इयेष अन्यथा तथाविधं प्रेम तादृशः पतिश्च तद् द्वयं कथं वा अवाप्यते ।।2।।

प्रसंग–यहाँ पार्वती के तपश्चरण के संकल्प का वर्णन किया जा रहा हैं।

अनुवाद– उन्होंने समाधि लगाकर अपनी तपस्या से अपने रूप को सफल बनाने का विचार किया क्योंकि किसी अन्य उपाय के द्वारा पति का वैसा उत्कृष्ट प्रेम तथा शंकर जी जैसा (मृत्युंजयी) पति–ये दोनों ही मिल भी कैसे सकते हैं? ।।2।।

शब्दार्थ –समाधिम् = एकाग्रता को। **आस्थाय** = लगाकर अथवा आश्रय प्राप्त कर। **तपोभिः** = तपस्या के द्वारा। **अवन्ध्यरूपताम्** = सफल सौन्दर्य इयेष इच्छा की। **तथाविधम्** = वैसा–(यह प्रेम का विशेषण है) उस प्रकार का प्रेम जो शिव की प्राप्ति करा सके। **प्रेम** = स्नेह। यह प्रेमन् शब्द की प्रथमा विभक्ति का एकवचन का रूप है। **तादृशः** = वैसा–उसप्रकार का। **पतिः** =वल्लभः। भारतीय स्त्रियाँ अपने पति के विषय में दो ही बातों को विशेष रूप से चाहा करती हैं– (1) दृढ़ स्नेह, (2) दीर्घ जीवन। इस श्लोक में तथाविधं प्रेम' तथा 'तादृशः पतिः' इन दोनों सेभी उपर्युक्त अभिप्राय ही ध्वनित होता है। **द्वयम्** = ये दोनों। **अवाप्यते** = प्राप्त होता है।

अतीव दुष्कर मनोरथ की पूर्ति के निमित्त मनु ने भी अपनी स्मृति में तप नामक साधन को ही उचित ठहराया है।

समासाः– अवन्ध्यरूपताम्–न वन्ध्यम् (नञ्तत्पु०) अवन्ध्यम् अवन्ध्यं च तद्रूपम् (कर्म०) अवन्ध्यरूपम् तस्य भावः अवन्ध्यरूपताम्। तथाविधम्–तथा विधा यस्य (बहु०) तत्।

निशम्य चैनां तपसे कृतोद्यमां सुतां गिरीशप्रतिसक्तमानसाम् ।
उवाच मेना परिरभ्य वक्षसा निवारयन्ती महतो मुनिव्रतात्।।3।।

अन्वयः– मेना गिरीशप्रतिसक्तमानसां तपसे कृतोद्यमां सुतां च निशम्य एनां वक्षसा परिरभ्य महतः मुनिव्रतात् निवारयन्ती 'सती' उवाच ।।3।।

प्रसंग– यहाँ माता मेना द्वारा पार्वती को तपस्या के सङ्कल्प से रोकने की चर्चा है –

अनुवाद– जब (पार्वती की सखी के द्वारा) मेना को यह बात मालूम हुई कि पार्वती का चित्त शिवजी में आसक्त हो गया है और वह तपस्या करने के लिए कृतसङ्कल्प है, तब वह अपनी पुत्री को गले से लगाकर तपस्या से निवृत्त करने के लिए इस प्रकार कहने लगीं।।3।।

शब्दार्थ –मेना – पार्वती की माता, हिमालय की पत्नी, गिरीशप्रतिसक्तमानसाम्–शिव के प्रति आसक्त हो गया है चित्त जिसका (पार्वती का विशेषण) ऐसी पार्वती, सुताम्– पुत्री को पार्वती को, तपसे तपः कर्तुम्– तप करने के निमित्त ,कृतोद्यमाम्–किया है प्रयास जिसने तप करने के लिये दृढ़ निश्चय रखने वाली, निशम्य –सुनकर, वक्षसा– हृदय से ,परिरभ्य– आलिंगन करके, हृदय से चिपटाकर, परि उपसर्ग के साथ प्रयुक्त रभु धातु का अर्थ आलिंगन करना होता है। मुनिव्रतात्– मुनियों का व्रत अर्थात् तपस्या से निवारयन्ती निवारण करती हुई, रोकती हुई। उवाच – बोली– इस क्रिया का कर्ता मेना तथा कर्म एनां अर्थात् पार्वती है।

समासाः –गिरीशप्रतिसक्तमानसाम्– गिरे : ईशः (म० तत्पु०) गिरीशः: गिरीशे प्रतिसक्तं मानसं यस्याः (बहु०) सा, ताम्।

कृतोद्यमाम्–कृतः उद्यमः यया (बहु०) सा कृतोद्यमाम्।

मुनिव्रतात् –मुनेः व्रतम् (पतत्पु०) मुनिव्रतम, तस्मात्।

मनीषिताः सन्ति गृहेषु देवता स्तपः क्व वत्से ? क्व च तावकं वपुः ?
पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं न पुनः पतत्रिणः ।।4।।

अन्वयः– हे वत्से ! मनीषिताः देवताः गृहेषु सन्ति । तपः क्व ? तावकं वपुश्च क्व ? पेलवं शिरीषपुष्पं भ्रमरस्य पदं सहेत, पतत्रिणः पुनः पदं न सहेत ।।4।।

प्रसंग – तपस्या से पार्वती को निवृत्त करने की इच्छा से मेना कहती है–

अनुवाद– वत्से ! अभिलाषा पूर्ण करने वाले देवता तो तुम्हारे घर में विद्यमान हैं। (तुम उन्हीं की आराधना करो) । कहाँ कठोर तपस्या और कहाँ तुम्हारा इतना कोमल शरीर ? शिरीष का कोमल फूल भौरों के सुकुमार चरण के भार को तो सहन कर सकता है किन्तु पक्षियों के चरण–भार को नहीं सहन कर सकता ।।4।।

शब्दार्थ –मनीषिताः– मन चाहे । **क्व**– कहाँ दो वस्तुओं के साथ जब **क्व** शब्द का दो बार प्रयोग किया जाता है, तब वह अन्तर की अधिकता का द्योतक होता है – कहाँ यह और कहाँ वह? **वपुः**– शरीर। मूल शब्द है – वपुष्। इसके रूप वपुः, वपुषी, वपूषि इत्यादि तपः और वपुः दोनों ही (भवति) क्रिया के कर्ता है यहाँ क्रिया पद लुप्त है। इसका अर्थ– कहाँ (कठोर) तप और कहाँ तुम्हारा (कोमल) शरीर। **भाव** – तुम्हारा यह सुकोमल शरीर तपस्या के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है। **शिरीषपुष्पम्–शिरीष** का फूल। यह फूल कोमलता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर यह सहेत क्रिया का कर्ता है। **पतत्रिणः** = पक्षी के।

समासाः– मनीषिताः– मनसः ईषा (प० तत्पु०) मनीषा, मनीषा सञ्जाता येभ्यः (बहु०) ते शिरीषपुष्पम् – शिरीषस्य पुष्पम् (य० तत्पुट) शिरीषपुष्पम्।

अलङ्कार –उक्त पद्य में दृष्टान्त अलंकार है।

इति ध्रुवेच्छामनुशासती सुतां शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात् ।
कईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत् ।।5।।

अन्वयः— इति अनुशासती मेना ध्रुवेच्छां सुताम् उद्यमात् नियन्तुं न शशाक ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः निम्नाभिमुखं पयश्च कः प्रतीपयेत्? ।।5।।

प्रसंग — अटल इच्छा वाली पार्वती को माता मैना उसके संकल्प से डिगा न सकी, यह प्रतिपादित किया जा रहा है—

अनुवाद— इस प्रकार समझा कर भी मेना अपनी दृढ़ संकल्पवाली पुत्री पार्वती को तपस्या करने के उद्यम से रोकने में समर्थ न हो सकी। अभीष्ट वस्तु को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पवाले मन तथा नीचे की ओर बहते हुए जल प्रवाह को घुमा देने में भला कौन समर्थ हो सकता है?।।5।।

शब्दार्थ — इति इस प्रकार, यह यहाँ उपर्युक्त दो पद्यों में वर्णित कथन की ओर संकेत करता है। साथ ही अनुशासती का कर्म भी है। अनुशासती उपदेश देती हुई। ध्रुवेच्छाम् — दृढ़ संकल्प से परिपूर्ण यह सुता का विशेषण है। उद्यमात्— प्रयत्न से (तपस्या करने से)। नियन्तुम् —रोकने के लिये, न शशाक— समर्थ न हो सकी। इस क्रिया का कर्ता मेना है। ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयम् (अपनी) अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति में दृढ़ निश्चय रखने वाला यह मन का विशेषण है। निम्नाभिमुखम् — नीचे (ढलान) की ओर बहता हुआ जल प्रतीपयेत्— पलट सकता है अथवा विपरीत लौटा सकता है।

समासाः—ध्रुवेच्छाम् ध्रुवा इच्छा यस्याः (बहु०) सा ध्रुवेच्छा, ताम्।

ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयम्— ईप्सितश्चासा अर्थः (कर्म०) ईप्सितार्थः स्थिरः निश्चयः यस्य (बहु०) तत् ।

निम्नाभिमुखम्— निम्ने अभिमुखम् (स० तत्पु०) तत्।

अलंकारः— उक्त पद्य में दीपक से अनुप्राणित अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

कदाचिदासन्नसखी मुखेन सा मनोरथज्ञं पितरं मनस्विनी ।
अयाचतारण्य निवासमात्मनः फलोदयान्ताय तपः समाधये।।6।।

अन्वयः—कदाचित् मनस्विनी सा मनोरथज्ञं पितरम् आसन्नसखीमुखेन फलोदयान्ताय तपः समाधये आत्मन अरण्यनिवासम् अयाचत ।।6।।

प्रसंग — यहाँ पार्वती द्वारा अपने पिता हिमालय से तपश्चर्या हेतु वनवास की आज्ञा माँगे जाने की बात कही जा रही है—

अनुवाद— अवसर पाकर एक बार पार्वती ने अपने मन की अभिलाषा को जानने वाले पिता से, अपनी समीपवर्तिनी सहेली द्वारा वन में जाकर तब तक तपस्या करने की अनुमति देने की प्रार्थना की जब तक कि अभीष्ट सिद्ध न हो जाये।।6।।

शब्दार्थ —**कदाचित्** = किसी समय **मनस्विनी** = दृढ़ संकल्प वाली अथवा स्वाभिमानी। अनेक विघ्नों के उपस्थित होने पर भी जो प्रारम्भ किये गये कार्य को नहीं छोड़ा करता है वह 'मनस्वी' कहा जाता है। मनस्वी का लक्षण—

महाकार्यो कृतोद्योगो विघ्नैराहतमानसः ।

प्रारब्धं न त्यजति यः स मनस्वीति कथ्यते ।

पार्वती ने भी अभीष्टकाल की प्राप्ति पर्यन्त तप करने का निश्चय किया था तथा वह उसमें आगे चलकर सफल भी हुई है, अतः उसी के लिये "मनस्विनी' शब्द का प्रयोग किया गया है और वह उक्त अर्थ में सार्थक भी है। **मनोरथज्ञम्** = (पार्वती को) अभिलाषा को जानने वाला। **आसन्न सखीमुखेन** = परम विश्वासपात्र अथवा अभिन्नहृदय सखी के माध्यम से। **फलोदयान्ताय** = फल प्राप्ति होने तक। यह **तपःसमाधये** का विशेषण है। **तपःसमाधये** – तपश्चरण अथवा नियम अथवा व्रत की सिद्धि के लिये यहाँ पर तादये चतुर्थी वाच्या' से चतुर्थी विभक्ति हुई है। **अरण्यनिवासम्** = वनवास को यह 'अयाचत' क्रिया का मुख्य कर्म है। **अयाचत** = माँगा।

समासाः–मनोरथज्ञम् – मनोरथं जानाति (उपपदतत्पु.) इति मनोरथः तम्

आसन्नसखीमुखेन– आसन्ना च असौ सखी तस्या मुखम् तेनआसन्नसखीमुखेन

फलोदयान्ताय– फलस्य उदयः स अन्तः यस्य स तस्मै

अरण्यनिवासम् –अरण्ये निवासः अरण्यनिवासः (सप्तमी तत्पु.)

अथानुरूपाभिनिवेशतोषिणा कृताभ्यनुज्ञा गुरुणा गरीयसा ।

प्रजासु पश्चात्प्रथितं तदाख्यया जगाम गौरी शिखरं शिखण्डिमत्।।7।।

अन्वयः– अथ गौरी अनुरूपाभिनिवेशतोषिणा गरीयसा गुरुणा कृताभ्यनुज्ञा सती, पश्चात् प्रजासु तदाख्यया प्रथितं शिखण्डिमत् शिखरं जगाम ।।7।।

प्रसंग – पिता से तपस्या की अनुमति पाकर पार्वती के तपोवन गमन का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं–

अनुवाद– पार्वती के इस उचित आग्रह से संतुष्ट होकर पूज्य पिता हिमालय ने उसे वन में जाकर तपस्या करने की आज्ञा दे दी। पार्वती मयूरों के झुण्ड से भरी हुई हिमालय की उस चोटी पर चली गईं जो बाद में उन्हीं के नाम पर गौरी शिखर के नाम से प्रसिद्ध हुई।।7।।

शब्दार्थ –**अनुरूपाभिनिवेशतोषिणा**– योग्य आग्रह से संतुष्ट हुये। यह गुरुणा का विशेषण है। शिव सदृश असाधारण पति को प्राप्त करने के लिये तपस्या करना पार्वती का आग्रह था जो वस्तुतः उनके अनुरूप ही था। इसी कारण उसके पिता हिमालय उसके इस निक्षय से संतुष्ट भी थे। **गरीयसा**– अत्यन्त पूज्य अर्थ वाले **गुरुणा** – पिता से 'गुरुगोष्यति पित्राद्यो' इत्यमरः। **कृताभ्यनुज्ञा**– दी जा चुकी थी, अनुमति जिसको ऐसी (पार्वती)। **तदाख्यया**– उसी (पार्वती) के नाम से। यहाँ करण में तृतीया विभक्ति हुई है। **प्रथितम्** – प्रसिद्ध शिखण्डिमत् मयूरों अथवा तपस्वियों से युक्त। शिखण्ड शब्द के यहाँ वह (चोटी) और चूड़ा ये दो अर्थ होते हैं 'शिखण्डो चहचूडयो' मेदिनीकोष शिखण्ड शब्द के चोटी तथा जटा ये दो अर्थ होने के कारण शिखण्डिन शब्द के भी ये दो अर्थ होते हैं– (1) मोर (2) तपस्वी 'शिखण्डी मुनिभेदं स्यात् मयूरेऽपि च कुच्यते। **शिखरम्**– चोटी को शिखण्डिमत शिखर का विशेषण है। वह शिखर जिसे पार्वती ने अपनी तपस्या के लिये चुना था, मोरों से युक्त था, उस स्थान पर हिंसक जन्तु नहीं रहा करते थे। अतः यह स्थल तपस्या की दृष्टि से उत्तम था अथवा वह स्थल तपस्वी जनों से युक्त था इस कारण पार्वती उस शिखर पर गई।

समासाः– अनुरूपाभिनिवेशतोषिणा –अनुरूपश्चासौ अभिनिवेशः (कर्म०) अनुरूपाभिनिवेशः तेन तुष्यतीति अनुरूपाभिनिवेश तोष्यति

कृताभ्यनुज्ञा– कृता अभ्यनुज्ञा यस्यै सा (बहु० समास) ।

तदाख्यया– तस्या आख्यातदाख्या तया तदाख्यया ।

गरीयसा– अतिशयेन गुरूः गरीयान् तेन गरीयसा

विमुच्य सा हारमहार्यनिश्चया विलोलयष्टिप्रविलुप्तचन्दनम् ।
बबन्ध बालारुणबभ्रु वल्कलं पयोधरोत्सेधविशीर्णसंहति।।8।।

अन्वयः– अहार्यनिश्चया सा विलोलयष्टिप्रविलुप्तचन्दनं हारं विमुच्य बालारुणबभ्रु पयोधरोत्सेधविशीर्ण संहति वल्कलं बबन्ध।।8।।

प्रसंग – यहाँ से आगे पाँच पद्यों में पार्वती ने तपस्या की जो तैयारी की उसका वर्णन है। प्रस्तुत श्लोक में उपक्रम करते हुए पहले वल्कल–बन्धन का वर्णन किया जा रहा है।

अनुवाद– दृढ़ निश्चय वाली पार्वती ने अपनी उस मोती की माला को उतार दिया जिसकी चंचल लड़ियों से उनके स्तनों का चंदन मिट गया था। अब उन्होंने उन स्तनों पर प्रातः कालीन सूर्य के समान लाल रंग का वल्कल बाँध लिया जो उनके स्तनों के उभार के कारण कुछ फट सा गया था।।8।।

शब्दार्थ –**अहार्यनिश्चया**– दृढ़ निश्चय वाली, यह सा का विशेषण है। **विलोलयष्टिप्रविलुप्तचन्दनम्**–हिलती हुई लड़ियों से चन्दन को पोंछने वाले (प्रविलुप्त पोंछने वाले) हार को यह हारम् का विशेषण है। **बालारुणबभ्रु**–प्रातःकालीन सूर्य के सदृश लाल–पीला। **बालः**– नवोदित अरुण सूर्य । बभ्रु– पिंगल। यह वल्कलम् का विशेषण है। **पयोधरोत्सेधविशीर्णसंहति**– स्तनों की ऊँचाई से छिन्न अवयव वाली विशीर्ण विघटित, छिन्न भिन्नः। यह भी वल्कलम् का विशेषण। **वल्कलम्**– वृक्षों की छाल को। **बबन्ध**– धारण कर लिया, बाँध लिया।

समासाः– अहार्यनिश्चया –न हार्यः (नञ् तत्पु०) अहार्यः निश्चयो यस्याः सा (बहु०)

विलोलयष्टिप्रविलुप्तचन्दनम् विशेषेण लोलाः (प्रादितत्पु०) विलोलाः विलोलाश्च ता यष्टयः (कर्म०) विलोलयष्टयः प्रकर्षेण विलुप्तम्–प्रविलुप्तम्– (सुप्सुपासमास) प्रविलुप्तं चन्दनं येन तत् (बहु०) प्रविलुप्तचन्दनः

विलोलयष्टिभि प्रविलुप्तचन्दनः (तृ० तत्पु०), तम्।

बालारुणबभ्रुः – बालश्वासौ अरुणः (कर्म०) बालारुणः ,स इव बभ्रुःबालारुण (कर्म०)

पयोधरोत्सेधविशीर्णसंहति – पयोधरयोः उत्सेधः (ष० तत्पु०) पयोधरोत्सेधः, पयोधरोत्सेधेन विशीर्णा (तृ० तत्पु०)सा संहतिः यस्य (बहु०) तत्।

अलंकारः– यहाँ परिवृत्ति नामक अलङ्कार है।

यथा प्रसिद्धैर्मधुरं शिरोरूहै र्जटाभिरप्येवमभूत्तदाननम् ।
न षट्पदश्रेणिभिरेव पङ्कजं सशैवलासङ्गमपि प्रकाशते।।9।।

अन्वयः– तदाननं प्रसिद्धैः शिरोरुहैः यथा मधुरम् अभूत्, जटाभिरपि एवं अभूत्। पङ्कजं षट्पदश्रेणिभिः एव न, किन्तु सशैवलासङ्गं सदपि प्रकाशते।।9।।

प्रसंग – तपस्या के समय जटाधारिणी होते हुए भी पार्वती कितनी सुमुखी प्रतीत हो रही थी, यह बताया जा रहा है।

अनुवाद– पार्वती का मुख जैसे पहले सजे सजाए बालों से सुन्दर लगा करता था वैसे ही जटाओं से भी सुशोभित लग रहा था। कमल भौंरों की पंक्तियों के साथ जितना सुन्दर लगता है उतना ही सेवारों से घिरा होने पर भी सुन्दर प्रतीत होता है।।9।

शब्दार्थ –तदाननम् – उसका मुँह। **प्रसिद्धैः**– सुसज्जित, अलङ्कृत। यह शिरोरुहैः का विशेषण है। **शिरोरुहैः**– बालों से। **जटाभिः**– जटाओं से जिन केशों को काटा छाँटा नहीं जाता तथा जो स्वाभाविक रूप से बढ़ते रहा करते हैं और जिनको पुष्पादि के द्वारा सजाया नहीं जाता, उन्हीं का नाम जटा है। वस्तुतः पार्वती का स्वाभाविक सौन्दर्य जटाओं को धारण कर लेने पर भी पूर्ववत् ही बना रहा, क्योंकि मनोहर आकृतियों के लिये सभी वस्तुयें अलङ्कार बन जाया करती हैं। **षट्पदश्रेणिभिः**– भ्रमर समूह से। **प्रकाशते** – चमकता है। **सशैवलासङ्गम्**– सिवार अथवा कोई के साथ भी। **आसङ्गः** – साहचर्य, साथ। **न षट्पदश्रेणिभिरेव प्रकाशते**– यह कालिदास की प्रसिद्ध सूक्ति है। इस प्रकार के भाव को प्रदर्शित करने वाली इनके कुछ अन्य ग्रन्थों में भी सूक्तियाँ मिलती है 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' (अभिज्ञान० 1 /20) अहो सर्वास्ववस्थास्वनवद्यता रूपस्य' (मालविकाग्निमित्र), अहो 'सर्वास्ववस्थासुरमणीयत्वमाकृतिविशेषाणाम्' (शाकुन्तल अङ्क– 6)। अन्य कवियों की रचनाओं में भी न रम्यमाहार्यमपेक्षते गुणम्' (किरातार्जुनीयम् 4/21) 'रम्याणां विकृतिरपि प्रियं तनोति (किरात 7/5) 'सर्वशोभनीयं सुन्दरं नाम' (प्रतिमानाटक–1), 'सर्वमलङ्कारो भवति सुरूपाणाम्' (अविमारक 2), 'स्वभावसुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते(दृष्टान्तशतक 49) (9)

समासाः –तदाननम्– तस्याः आननम् (ष० तत्पु०)।

सशैवलासङ्गम्–शैवलानाम् आसङ्गः (प० तत्पु०) शैवलासङ्गः शैवलासङ्गेन सह वर्तते (बहु) इति तत्।

अलंकारः– इस पद्य में 'प्रतिवस्तूपमा' अलङ्कार है।

प्रतिक्षणं सा कृतरोमविक्रियां व्रताय मौजीं त्रिगुणां बभार याम् ।
अकारि तत्पूर्वनिबद्धया तया सरागमस्या रसनागुणास्पदम् ।।10।।

अन्वयः – सा प्रतिक्षणं कृतरोमविक्रियां त्रिगुणां यां मौञ्जीं व्रताय बभार, तत्पूर्वनिबद्धया तया अस्याः रसनागुणास्पद् सरागम् अकारि **।।10।।**

प्रसंग –तपस्या के लिए अत्यावश्यक मौज्जीबन्धन के विषय में कहा जा रहा है–

अनुवाद– व्रत पालन के लिये पार्वती ने करधनी के बदले में तीन लड़ों से बँटी हुई, प्रतिक्षण रोमांच पैदा कर देने वाली मूँज की मेखला पहन ली, जिसने उसके पूर्व बाँधी गई करधनी के नितम्ब स्थित स्थान को लाल रंग का बना दिया **।।10 ।।**

शब्दार्थं –व्रताय – तपस्या करने के निमित्त। यहाँ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानितः से चतुर्थी विभक्ति होतो है। **प्रतिक्षणम्**– प्रत्येक क्षण। **कृतरोमविक्रियाम्**– रोमाञ्च उत्पन्न करने वाली यह मौज्जी का विशेषण है। मेखला अत्यधिक कठोर होने के कारण रोमाञ्च उत्पन्न कर रही थी। **त्रिगुणाम्** – तीन लड की। **गुण**– रस्सी, आवृत्ति लड़ा यह भी मौज्जी' का विशेषण है। **मौञ्जी**– मूँज से बनी हुई। यह बभार क्रिया का कर्म है। यह मूँज की डोरी से बनी हुई तीन लड़ियो की करधनी के सदृश होती है, इसी का नाम मूँज की मेखला है। **बभार**– धारण किया, पहन लिया।

तत्पूर्वनिबद्धया– जो जीवन में प्रथम बार ही बाँधी गई थी यह 'तया' का विशेषण है, जो मेखला के लिये प्रयुक्त हुआ है। **रसनागुणास्पदम्** – मेखला (करधनी) बाँधने का स्थान अर्थात् कमर को, रसना–मेखला, करधनी। **गुण**– डोरी। **आस्पदम्**– स्थान। **सरागम्**– लाल, रक्तवर्ण का। **अकारि**– कर दिया।

समासाः – प्रतिक्षणम् –क्षणे क्षणे इति (अव्ययीभावः)।

कृतरोमविक्रियाम् –रोम्णां विक्रिया (प० तत्पु०) रोमविक्रिया कृता रोमविक्रिया यया सा (बहु०) ।

त्रिगुणाम्–त्रयः गुणाः यस्याः सा (बहु०)

रसनागुणास्पदम् –रसनायाः गुणः (प० तत्पु०) रसनागुणः: रसनागुणस्य आस्पदम् (प० तत्पु०) रसनागुणास्पदम्।

सरागम् –रागेण सहितम् (तृ. तत्पु०)

अलंकारः–उक्त पद्य में 'परिवृत्ति' नामक अलङ्कार ध्वनित होता है।

बोध /अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न–

1. **प्रियेषु सौभाग्यफला हि ....**
2. **क ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं ....**
3. **जगाम ....शिखरं शिखण्डिमत्**
4. **निवारयन्ती महतो ....**

अभ्यास प्रश्न–

पार्वती की विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए ।

9.3 सारांश

- प्रस्तुत इकाई मे आपने जाना कि सुकोमल पार्वती किस प्रकार कठिन तपस्या करने के लिए अटल रही।
- शिवजी की प्राप्ति हेतु कृतसंकल्प वाली पार्वती कठिन तपस्या करने लगी ।
- आपने जाना कि पार्वती ने अपने सुकोमल शरीर की ओर ध्यान न देकर केवल लक्ष्य प्राप्ति की ओर ही ध्यान दिया ।
- लक्ष्य निश्चित होने पर लक्ष्य प्राप्ति की ओर अनवरत प्रयास अवश्य ही सफलता दिलाते हैं ,हमें धैर्यपूर्वक प्रयत्न करते रहना चाहिए ,जब तक फल प्राप्ति न हो।

9.4 शब्दावली

1. निर्मल– स्वच्छ ,पवित्र
2. ध्रुवम्' –निश्चित ही
3. पराकाष्ठा –चरम सीमा, उच्चता

4. वैर – दुश्मनी, शत्रुता

10.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) कुमारसम्भवम् (पंचम सर्ग),व्याख्याकार डा. विश्वनाथ शर्मा

2) संस्कृत साहित्य का इतिहास – डा मधु सत्यदेव

3) संस्कृत कवि दर्शन – भोला शंकर व्यास

4) कुमारसम्भवम् (1–5 सर्ग),व्याख्याकार डा. श्रीकृष्ण त्रिपाठी,चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान,दिल्ली

बोध /अभ्यास प्रश्नोंके उत्तर

बोध प्रश्नों के उत्तर

1 चारुता

2 मनः

3 गौरी

4 मुनिव्रतात्

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर–

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखे।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY